श्री चन्द्रप्रभ विधान

मंगल आशीर्वाद

समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य 108 श्री विद्याभूषण

सन्मति सागर जी महाराज

एवं

समाधिस्थ परम पूज्य सराकोद्धारक षष्टम पट्टाचार्य

108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज

रचयित्री

परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,

गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी

प्रकाशक

श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

Website : www.jainswastisandesh.com

Link to Facebook : swastibhushanmataji

श्री 1008 आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव
दिनांक 1 फरवरी से 6 फरवरी 2023, ज्ञानतीर्थ, मुरैना (म.प्र.)
पावन निर्देशन - परम विदुषी लेखिका, भारत गौरव,
गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी
पावन अवसर पर प्रकाशित

कृति	:	श्री चन्द्रप्रभ विधान
चतुर्थ संस्करण	:	1100 प्रतियाँ
प्रकाशन वर्ष	:	2023
न्यौछावर राशि	:	25.00 मात्र (साहित्य सृजन हेतु)
प्रकाशक	:	श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)

प्राप्ति स्थान :

1. **स्वराज कुमार जैन, अध्यक्ष श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि)**
   दूरभाष : 0129-4144329, 9868345768
2. **राहुल जैन, सचिव श्री स्वस्ति कल्याण समिति (रजि.)**
   दूरभाष : 07906062500, 09212515167
3. **श्री जैन साहित्य सदन, लाल मन्दिर, चाँदनी चौक दिल्ली**
   दूरभाष : 09311168299, 011-23253638
4. **श्री आदिनाथ सेवा संस्थान**
   श्री सोनागिर सिद्ध तीर्थ क्षेत्र, दतिया (मध्य-प्रदेश)
5. **श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम**
   शाहपुरा रोड़, जहाजपुर, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान
   दूरभाष : 9784853787

मुद्रक : दिपिशा एंटरप्राइज (दिल्ली) मो. 9210488047

प्रशांत मूर्ति आचार्य शांतिसागर 'छाणी' और उनकी आचार्य परम्परा

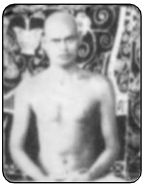

बाल ब्रह्मचारी, प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज 'छाणी' (उत्तर)

जन्म तिथि – कार्तिक वदी एकादशी, वि.सं. 1945 (31.10.1888)
जन्म स्थान – ग्राम - छाणी, जिला - उदयपुर (राजस्थान)
जन्म नाम – श्री केवलदास जैन
पिता का नाम – श्री भागचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति माणिक बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – सन् 1922 (वि.सं. 1979), ग्राम गढ़ी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)
मुनि दीक्षा – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी वि.सं. 1980 (23.09.1923), सागवाड़ा जिला-डूंगरपुर (राज.)
आचार्य पद – सन् 1926 (वि.सं. 1983), गिरिडीह (झारखंड)
समाधिमरण – ज्येष्ठवदी दशमी (वि.सं. 2001) 17 मई, 1944, सागवाड़ा डूंगरपुर (राज.)

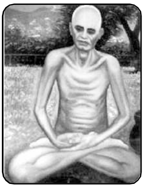

परम पूज्य प्रथम पट्टाचार्य 108 श्री सूर्यसागर जी महाराज

जन्म तिथि – कार्तिक शुक्ल नवमी, वि.सं. 1940 (09.11.1883)
जन्म स्थान – प्रेमसर, जिला - ग्वालियर (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री हजारीमल पारेवाल जैन
पिता का नाम – श्री हीरालाल जैन
माता का नाम – श्रीमती गेदा बाई जैन
ऐलक दीक्षा – आसोज शुक्ल छठ वि.सं. 1981 (04.10.1924, इन्दौर (म. प्र.)
मुनि दीक्षा – मार्गशीर्ष वदी ग्यारस वि.सं. 1981 (23.11.1924), हॉटपिपल्या जिला-देवास (म.प्र.)
दीक्षा गुरु – आचार्य श्री शांतिसागर 'छाणी' महाराज से
आचार्य पद – कार्तिक शुक्ल दशमी वि.सं. 1985 (22.11.1928), कोडरमा (झारखंड)
समाधिमरण – श्रावण कृष्ण अष्टमी वि.सं. 2009 (14.07.1952), डालमिया नगर (झारखंड)

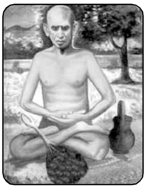

परम पूज्य द्वितीय पट्टाचार्य श्री 108 विजयसागर जी महाराज (वचन सिद्धि आचार्य)

जन्म तिथि – माघ सुदी अष्टमी, वि.सं. 1938 (26.01.1882)
जन्म स्थान – सिरौली, जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री चोखेलाल जैन
पिता का नाम – श्री मानिक चन्द जैन
माता का नाम – श्रीमती लक्ष्मी बाई जैन
क्षुल्लक दीक्षा – इटावा (उत्तर प्रदेश)
ऐलक दीक्षा – मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मुनि दीक्षा – वि.सं. 2000 (सन् 1943) मारोठ जिला-नागौर (राज.)
दीक्षा गुरु – प्रथमपट्टाचार्य श्री 108 सूर्यसागर जी महाराज
आचार्य पद – लश्कर, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)
समाधिमरण – पौष वदी नवमी वि.स. 2019 (20.12.1962) मुरार, जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

परम पूज्य तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज (भिण्ड वाले)

जन्म तिथि – पौष शुक्ल द्वितीया, वि.सं. 1948 (01.01.1892)
जन्म का नाम – श्री किशोरी लाल जैन
जन्म स्थान – ग्राम-मोहना, जिला-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
पिता का नाम – श्री भीकमचन्द जैन
माता का नाम – श्रीमति मथुरा देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – वि.सं. 1997 (सन् 1941)
ऐलक दीक्षा – कापरेन नगर जिला कोटा (राज.)
मुनि दीक्षा – अगहन वदी पंचमी वि.सं. 2000 (17.11.1943) कोटा (राज.) में
दीक्षा गुरु – द्वितीय पट्टाचार्य श्री विजयसागर जी महाराज द्वारा पाटन, झालावाड़ (राज.)
आचार्य पद – वि.सं. 2030 (सन् 1973), हाड़ौती (राज.) में
समाधिमरण – बैशाख कृष्ण अष्टमी, वि.सं. 2030 (26.04.1973), दिन गुरुवार, सांगोद जिला कोटा (राज.)

मासोपवासी, समाधि सम्राट परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य 108 श्री सुमतिसागर जी महाराज

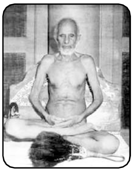

जन्म तिथि – आसोज शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 1974 (20.10.1917)
जन्म स्थान – ग्राम - श्यामपुर, जिला - मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री नत्थीलाल जैन
पिता का नाम – श्री छिद्दूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमति चिरौंजी देवी जैन
ऐलक दीक्षा – चैत शुक्ल त्रियोदशी वि.सं. 2025 (11.04.1968), रिवाड़ी (हरियाणा) में
ऐलक नाम – श्री वीरसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – तृतीय पट्टाचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – अगहन वदी द्वादशी वि.सं. 2025 (17.11.1968), गाजियाबाद (उ.प्र.)
आचार्य पद – ज्येष्ठ सुदी पंचमी वि.सं. 2030 (05.06.1973), मुरैना (म.प्र.) (तृतीय पट्टाचार्य श्री विमलसागर जी 'भिंड' महाराज से)
समाधिमरण – क्वार वदी त्रियोदशी वि.सं. 2051(03.10.1994), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)

परम पूज्य पंचम पट्टाचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज

जन्म तिथि – अगहन वदी चतुर्थी, वि.सं. 2006 (10.11.1949)
जन्म स्थान – बरवाई, जिला - मुरैना (म.प्र.)
जन्म नाम – श्री सुरेश चन्द जैन
पिता का नाम – श्रीमंत सेठ श्री बाबूलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती सरोज देवी जैन
क्षुल्लक दीक्षा – फाल्गुन शुक्ल तृतिया वि.सं. 2028 (17.02.1972) श्री सम्मेदशिखर जी (झारखंड)
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरी जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज
आचार्य पद – चैत्र सुदी पंचमी वि.सं. 2046, (10.04.1989) नरवर जिला- शिवपुरी (म.प्र.) पंचकल्याणक महोत्सव के उत्सव पर
समाधिमरण – फाल्गुन सुदी तृतीया वि.सं. 2069 (14.03.2013)

परम पूज्य राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक, वात्सल्यमूर्ति षष्टपट्टाचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज

जन्म तिथि – वैशाख सुदी द्वितीया, वि.सं. 2014 (01.05.1957)
जन्म स्थान – मुरैना (मध्य प्रदेश)
जन्म नाम – श्री उमेश कुमार जैन
पिता का नाम – श्री शांतिलाल जैन
माता का नाम – श्रीमती अशर्फी देवी जैन
ब्रह्मचर्य व्रत – वि.सं. 2031 (सन् 1974)
क्षुल्लक दीक्षा – कार्तिक सुदी चतुर्दशी वि.सं. 2033 (05.11.1976) सोनागिरि सिद्धक्षेत्र में
क्षु. दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुमति सागर जी महाराज
क्षु. दीक्षोपरान्त नाम – क्षुल्लक 105 श्री गुणसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा – चैत्र सुदी त्रियोदशी वि.सं. 2045 (31.03.1988), सोनागिरि जी सिद्धक्षेत्र जिला-दतिया (म.प्र.)
मुनि दीक्षोपरान्त नाम – मुनि श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज
दीक्षा गुरू – चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीसुमतिसागर जी महाराज
उपाध्याय पद – माघ वदी अष्टमी वि.सं. 2045 (30.01.1989), सरधना (मेरठ)
आचार्य एवं षष्ठपट्टाचार्य पद – ज्येष्ठ वदी तृतीया वि.सं. 2070 (27.05.2013) तीर्थ क्षेत्र बड़ागाँव जिला-बागपत (उ.प्र.)
समाधि – कार्तिक कृष्ण अमावस्या वि.सं. 2077, भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव, 15.11.2020, दिन रविवार, बारां (राज.)

गणिनी आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्तिभूषण माता जी

जन्म तिथि – 1-11-1969 कार्तिक कृष्ण सप्तमी दिन, शनिवार (वि.सं. 2026)
जन्म स्थान – छिंदवाडा (मध्य प्रदेश) बचपन सिवनी
जन्म नाम – संगीता जैन (गुड़िया)
पिता का नाम – श्री मोती लाल जैन (निवासी सिवनी) वर्तमान में (क्षु. श्री 105 परिणामसागर जी महाराज)
माता का नाम – श्रीमती पुष्पा देवी जैन वर्तमान में (क्षु. श्री 105 अर्हत मती माताजी)
प्रथम ब्रह्मचर्य व्रत – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
लौकिक शिक्षा – एम. ए. (संस्कृत)
आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत
दीक्षा गुरू – प्रशान्तमूर्ति आचार्य 108 श्री शान्ति सागर जी (छाणी) महाराज (उत्तर) के पंचम पट्टाचार्य सिंहरथ प्रवर्तक त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज
दीक्षा तिथि व स्थान – 24 जनवरी 1996 माघ शुक्ल पंचमी, दिन बुधवार, (वि.सं. 2052) इटावा (उ.प्र.)
वर्तमान पट्टगुरु व गणिनी पद प्रदाता – परम पूज्य सराकोद्धारक तीर्थोद्धारक षष्ठम पट्टाचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज
तिथि एवं स्थान – 13 फरवरी 2020 फाल्गुन कृष्ण पंचमी, दिन बृहस्पतिवार (वि.सं. 2076), तीर्थ क्षेत्र स्वस्ति धाम, जहाजपुर (राजस्थान)

प्रस्तावना

चंदाप्रभु भगवान की भक्ति में कुछ समय व्यतीत करने हेतु इस विधान को जन–जन तक पहुंचाने वाली मृदुभाषिणी, सरल स्वभाविका, विदुषी लेखिका, परम पूज्य आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माता जी हैं। जिन्होने अपने द्वारा रचित 100 से अधिक रचनाओं के माध्यम से समाज में जैन धर्म की अद्‌भुत प्रभावना की है। पूज्य माता जी के लेखन की धारा, ओजस्वी प्रवाह वास्तव में ज्ञान की वह मंदाकिनी है जिसमें बार–बार डुबकी लगाने का मन होता है एवं उनकी वाणी का गुरुत्वाकर्षण तो हृदय की गहराईयों में समा जाता है। जो एक बार सुनता है तो उसको ग्रहण किये बिना रह नहीं पाता। जहां–जहां माता जी का पदार्पण होता है वहां का वातावरण धर्ममय हो जाने के साथ–साथ बसन्त की बहार के समान हो जाता है।

2010 फरवरी में सिद्ध क्षेत्र सोनागिर के पंचकल्याणक में पहुंचने हेतु जब पूज्य माता जी दिल्ली से चलकर आगरा पहुँची तो अचानक माता जी के मन में चंद्रप्रभ भगवान के प्रति कुछ भाव मन में आयें, और जब उन्होंने लेखनी चलाई तो एक अनूठे विधान की रचना हुई और वह आपके हाथों में है। इस विधान में पूज्य माता जी नें 108 अर्घ्यों के द्वारा भगवान चंदाप्रभु का गुणगान किया हैं। जी हां माता जी का साहित्य ही ऐसा है कि इसको पढ़कर कोई भूल नहीं पाता, अपने आचरण में उतार लेता है। और भी विभिन्न प्रकार के चालीसा, पूजायें, भजन, आरती, कवितायें, मुक्तक एवं अध्यात्म भी पूज्य माता जी के साहित्यों में अलंकृत हैं। सभी साहित्य अपने में लालित्यपूर्ण है। भक्त जन साहित्य को पढ़कर अपने धार्मिक प्रश्नों का हल खोज लेते हैं। क्योंकि पूज्य माता जी का हर साहित्य सरल, मधुर और सारगर्भित है। जिसको पढ़ने से मन में एक नई चेतना जागृत होती है। इस चन्द्रप्रभ विधान में पूज्य माता जी द्वारा छह वलयों में वर्णन दिया हैं जिसमें प्रथम वलय में अनंत चतुष्टय के चार अर्घ्य, द्वितीय वलय में अष्ट प्रातिहार्य के आठ अर्घ्य, तृतीय वलय में सोलह कारण भावना के अर्घ्य, चतुर्थ वलय में अट्‌ठारह महादोष रहित अर्घ्य, पंचम वलय में बत्तीस अर्घ्य और षष्टम वलय में चंदाप्रभु भगवान के शेष गुणों का वर्णन सुंदर शब्दों में पिरोया गया है। आप इस विधान को पढ़कर स्वयं आनंद का अनुभव करेंगे। जय जिनेन्द्र एवं पूज्य माता जी के चरणों में कोटि–कोटि वंदामी।

– ब्र0 शालू दीदी (संघस्थ)

श्री चन्द्रप्रभ विधान
माँडला

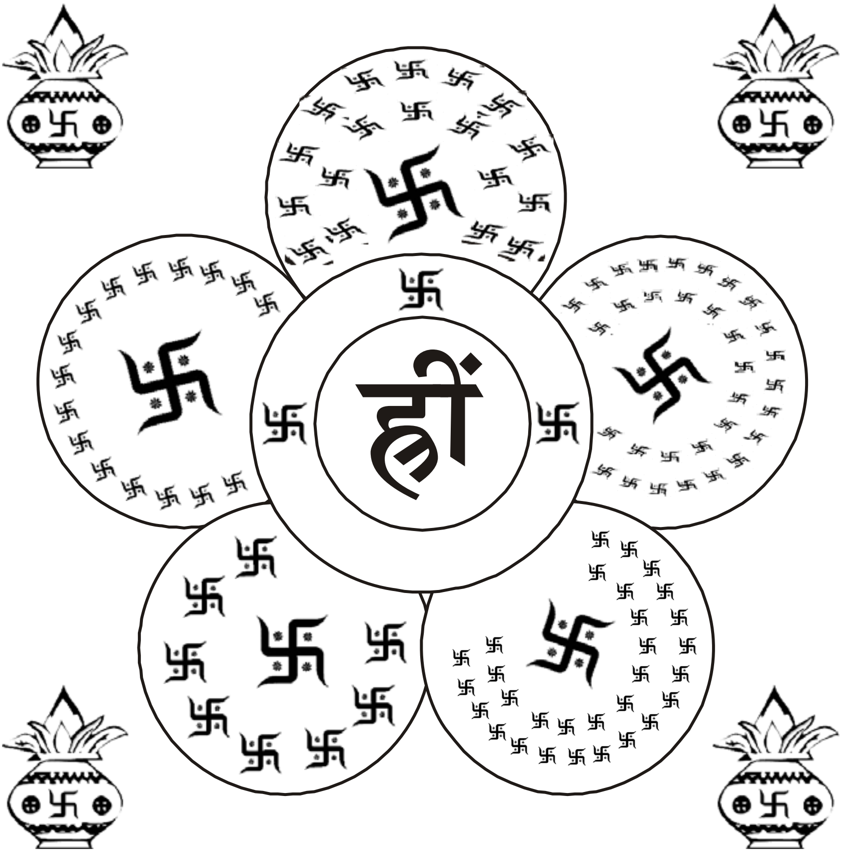

श्री चन्द्रप्रभ विधान

त्रिभंगी छंद

अध्यात्म सिंधु, हम भक्त बिन्दु, सुख सागर बनने आये हैं।
दुख ने है घेरा, कष्ट घनेरा, उसे मिटाने आये हैं।।
तुम परम हंस, हम कर्म दंश, इस दंश से मुक्ति पाना है।
तुम सौख्य तरुवर, ज्ञान सरोवर, आकर हमें नहाना है।।

दोहा

शक्ति कम भक्ति अधिक, शब्द हुये हैं दूर।
चंद्र प्रभो भगवान जी, आशीष दो भरपूर।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आहननं। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

त्रिभंगी छंद

मन कर्म से काला, पाप की हाला, पी आतम मदहोश हुआ।
चंदा सम उज्ज्वल, शांत धवल सम, प्रभु को लख शुभ ज्ञान हुआ।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
जल चरण चढ़ाऊं, महिमा गाऊं आया है आनंद घना।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निव0 स्वाहा।

यह आत्म निवेदन, है आवेदन, मन संतापित रहता है।
शीतल है चंदा, देव जिनंदा, भक्त ये मन से कहता है।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
चंदन ले आया, चरण चढ़ाया, आया अब आनंद घना।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व0 स्वाहा।

नश्वर जग माया, नश्वर काया, फिर भी पीछे भाग रहे।
चेतन यह जागे, मन शुभ लागे, अक्षय पद का ध्यान रहे।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
अक्षत ले आया, चरण चढ़ाया, आया अब आनंद घना।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय अक्षतं निर्व0 स्वाहा।

हे काम विमोचन, रूप सुलोचन, आतम रूप सुहाया है।
फूलों पर भंवरे, जाकर संवरे, भंवरा भक्त ये आया है।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
यह पुष्प ले आया, चरण चढ़ाया, आया है आनंद घना।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व0 स्वाहा।
मन है ये भूखा, पाप से सूखा, धर्म से तृप्त कराना है।
आसक्ति छूटे, कर्म ये टूटे, बस अब तुमको ध्याना है।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
नैवेद्य ले आया, चरण चढ़ाया, आया है आनंद घना।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व0 स्वाहा।
तूफान बीच में, कर्म कीच में, ज्ञान ज्योति बुझती जाये।
तुम ज्ञान के दाता, भाग्य विधाता, सच्चा पथ तुमसे पायें।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
दीपक ले आया, चरण चढ़ाया, आया है आनंद घना।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व0 स्वाहा।
हम कर्म बुलाते, साथ बिठाते, फल पाने पर रोते हैं।
विनती से न जाये, तप से भगाये, बीज मुक्ति का बोते हैं।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
मैं धूप ले आया, चरण चढ़ाया, आया है आनंद घना।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
भक्तों की भक्ति, है अभिव्यक्ति, मुक्ति फल पर ललचाया।
जग लौट न आऊँ, आतम ध्याऊँ, भाव आज मन में लाया।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
मैं फल ले आया, चरण चढ़ाया, आया है आनंद घना।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
हो ज्ञान सूर्य तुम, चंद्र शांत सम, तुलना किससे की जाये।
उपमायें व्यर्थ हैं, ध्यान अर्थ है, भक्त तेरे गुण नित गाये।।
चंदा छवि प्यारी, हृदय में धारी, भक्ति का त्योहार मना।
ये अर्घ्य ले आया, चरण चढ़ाया, आया है आनंद घना।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

दोहा

मुक्ति पाने के लिये, हुये गर्भ में कैद।
कहीं रहें कुछ भी करें, है जड़ चेतन भेद।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण पंचमीदिवसे गर्भमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनम लिया हर्षित हुये, बजी बधाई खूब।
पौष कृष्ण एकादशी, जय–जयकार की गूंज।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण एकादश्यां जन्ममंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जग को जान के, क्षण में दिया है छोड़।
दीक्षा ले मुनि मौन हो, आत्म से नाता जोड़।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण एकादश्यां तपोमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञान की ज्योति ने, किया जगत परकाश।
समवशरण रचना हुई, भक्त को दर्श की आश।।

ॐ ह्रीं फाल्गुणकृष्ण सप्तम्यां ज्ञानमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म से रिश्ता तोड़कर, पहुंच गये शिवधाम।
रिश्ता तुमसे जोड़कर, भक्त लेते हैं नाम।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल सप्तम्यां मोक्षमंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

ध्येय बना और ध्यान कर, आतम ध्यान लगाय।
पुष्पांजलि कर पूजते, शत–शत शीश झुकाय।

।।मंडलोस्परि पुष्पांजलिं।।

प्रथम वलय

अनंत चतुष्टय अर्घ्यावली

चौपाई

तीन लोक इक बार में दिखता, पर नाही कुछ राग है रहता।
सबसे सुंदर आतम दर्शन, नाही राग द्वेष का घर्षण।।
नहीं कामना करूँ साधना, बस मेरी है यही भावना।
जड़ को तज चेतन को ध्याऊँ, प्रभु चरणों में शीश झुकाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

ज्ञान वही मुझको आ जाये, जिसमे आतम रूप दिखाये।
ऐसा ज्ञान प्रभु ने पाया, इसीलिये प्रभु शरण में आया।।2।।
नहीं कामना...............

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

हर प्राणी को सुख की चाहत, सुख में ही मिलती है राहत।
मोह तजा सच्चा सुख पाओ, ऐसे प्रभु की शरण में आओ।।3।।
नहीं कामना...............

ॐ ह्रीं अनन्त सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह दीवार को नित्य सजायें, कमजोरी बढ़ती ही जाये।
आत्म अनंत शक्ति के धारी, पाया जिनने धोक हमारी।।4।।
नहीं कामना...............

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा

अनंत चतुष्टय धार कर, आतम दर्श प्रमाण।
बोधि समाधि प्राप्त कर, इक दिन हो निर्वाण।।

ॐ ह्रीं प्रथम वलये अनंत चतुष्टय सहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय

अष्टप्रातिहार्य अर्घ्यावली

शंभू छंद

जब मोह भगा तब शोक ना है, आतम के ध्यान में लीन रहे।
वे तरु अशोक नीचे बैठे, जो सबके शोक को भगा रहे।।
प्रभु तेरे नाम को जपता रहूँ, बस मेरा ऐसा मन कर दो।
हे समवशरण में बैठे जिन, आतम में ज्ञान सुमन भर दो।।5।।

ॐ ह्रीं अर्ह श्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया की जिन्हें जरूरत ना, ये तीन छत्र सिर ऊपर हैं।
वैभव बतलाता ये सारा, मेरे प्रभु सबसे गुणधर हैं।।6।।
प्रभु तेरे.........

ॐ ह्रीं अर्ह श्री त्रिछत्र प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णिम सिंहासन लालायित, स्पर्श आपका पाने को।
चतु अंगुल ऊपर आप बसे, मुक्ति में शीघ्रहि जाने को।।7।।
प्रभु तेरे.........

ॐ ह्रीं अर्ह श्री सिंहासन प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आत्म ध्यान में लीन रहें, पर दिव्य ध्वनि उपदेश देय।
सबकी भाषा में परिणत हो, हर जीव समझ कर ज्ञान लेय।।8।।
प्रभु तेरे.........

ॐ ह्रीं अर्ह श्री दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरज चंदा और वृक्ष कभी, गुण गीत स्वयं न गाते हैं।
प्रभुवर तेरे गुण गाने को, दुदुंभि बाजे बज जाते हैं।।9।।
प्रभु तेरे.........

ॐ ह्रीं अर्ह श्री दुदुंभि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के सानिंध्य को पाकर के, सारी सृष्टि थी हरषाई।
शुभ मंद–मंद भी पवन चले, फूलों की क्यारी लहराई।।10।।
प्रभु तेरे.........

ॐ ह्रीं अर्ह श्री पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का भामंडल फैला जब, सूरज चंदा भी हार गया।
भक्तों ने आतम दर्श किया, सब कर्मों का भी भार गया।।
प्रभु तेरे नाम को जपता रहूँ, बस मेरा ऐसा मन कर दो।
हे समवशरण में बैठे जिन, आतम में ज्ञान सुमन भर दो।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भामंडल प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चंवरो के द्वारा भी, देवो ने सेवा कीनी है।
वह भाग्य हमारा नहीं प्रभो, बस भक्ति ही कर लीनी है।।12।।
प्रभु तेरे.........

ॐ ह्रीं अर्ह श्री चौंसठ चंवर प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

प्रातिहार्य भी धन्य हुये, करके सेवा भाव।
मम भक्ति स्वीकार लो, पार लगाओ नाव।।

ॐ ह्रीं द्वितीय वलये अष्ट प्रातिहार्य सहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय

षोडस कारण भावना गुण अर्घ्यावली

चाल छंद

दर्शन को शुद्ध किया है, आतम का दर्श लिया है।
सच्चाई जग की जानी, जड़ की फिर बात न मानी।।13।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिमान नहीं टिक पाया, झुक कर आतम को पाया।
था विनय महागुण धारा, तीर्थंकर बंध सम्हारा।।14।।

ॐ ह्रीं दर्शन विनय सम्पन्न भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वे शील व्रतों को पालें, टूटे संकट के जाले।
यह शील भी मुझमें आये, बस यही भावना भाये।।15।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतनिरतिचार भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ज्ञान से ज्ञान बढ़ाया, जब आतम ध्यान लगाया।
हम ज्ञान जगत में लगाते, इससे ही दुःख उठाते।।16।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग दुष्कर्मों से डरते, न पाप की गागर भरते।
ऐसे हों भाव हमारे, प्रभु शरणा आये तिहारे।।17।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

शक्ति से त्याग किया है, तब उत्तम त्याग लिया है।
हम त्याग की शक्ति पायें, फिर जग में ना भरमायें।।18।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप बिन ये कर्म ना भागे, तप बिन आतम ना जागे।
तप ही आतम चमकावे, तपसी को शीश झुकावे।।19।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु समाधि करवाते, फिर स्वयं समाधि से जाते।
सब आधि व्याधि हट जावे, हम भी समाधि से जावें।।20।।

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैय्यावृत्ति अपनाई, सेवा करते करवाई।
सेवा का फल बतलाया, तीर्थंकर पद को पाया।।21।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति करण भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरिहंत भक्ति को गाया, गुण गाकर मन हर्षाया।
शुभ भाव सुखद फल पाया, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया।।22।।

ॐ ह्रीं अरहंत भक्ति भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति पथ के हैं गामी, और शिष्य बने अनुगामी।
आचार्य है करूणा सागर, आशीष की भरते गागर।।23।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुश्रुत भक्ति करते हैं, अज्ञान दशा हरते हैं।
जिनवाणी गीत को गाऊँ, चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ।।24।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों को शुद्ध बनाया, प्रवचन भक्ति को गाया।
प्रवचन से ज्ञान को पाते, चरणों में शीश झुकाते।।25।।

ॐ ह्रीं प्रवचन करण भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक निज करते हैं, इससे ही दुख हरते हैं।
मैं भी इसको नित पालूँ, फिर जनम दुबारा ना लूँ।।26।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणि भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करना हैं धर्म प्रभावन, जिससे हर मन हो पावन।
हिंसा कषाय को त्यागूँ, बस मुक्ति के पथ लागूँ।।27।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य के हैं प्रभु सागर, सब को दें ज्ञान सुधाकर।
हम द्वेष ईर्ष्या त्यागें, वात्सल्य धार बरसावें।।28।।

ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सल्य भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा

सोलह भाव की भावना, तन मन शुद्ध बनायें।
चन्द्र प्रभू भगवान के, चरणन अर्घ्य चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं तृतीय वलये षोडस कारण भावना सहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

18 महादोष रहित अर्घ्यावली

तर्ज – दरश विशुद्ध भावना भाय. . .

चारों गति में भूख सतायें, भूख मेटो हम पूजा गायें।
हो कल्याण, प्रभु जी मेरा, हो कल्याण।।
रत्नत्रय का बोध करादो, मुक्ति का रास्ता दिखलादो।
हो कल्याण, प्रभु जी मेरा, हो कल्याण।।29।।

ॐ ह्रीं क्षुधा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

पानी पीकर भी हूँ प्यासा, प्यास बुझे ये मुझको आशा।
बुझे ये प्यास, प्रभु जी मुझको, है यह आश।।30।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं तृष्णा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

भय ने तप से दूर किया है, इससे जग में कष्ट लिया है।
भगे डर दूर, अभय होऊ, तप हो भरपूर।।31।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं भय महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध बोध न होने देता, बदले में ना कुछ भी मिलता।
भगे यह क्रोध, हो जावे आतम का बोध।।32।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं क्रोध महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

चिंता की घुन मुझको खाये, जीवन स्वस्थ होने न पाये।
चिंता हो दूर, चिंतन हो जाये भरपूर।।33।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं चिंता महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

जर–जर काया जब हो जाये, खुश्क बुढ़ापा खूब सताये।
जरा हो दूर, खिले धर्म का मन में फूल।।34।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं जरा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

जिससे राग वही दुःख देय, अशुभ बंध फल अशुभ ही लेय।
हो वैराग्य, जग से मुझको हो वैराग्य।।

रत्नत्रय का बोध करादो, मुक्ति का रास्ता दिखलादो।
हो कल्याण, प्रभु जी मेरा, हो कल्याण।।35।।

ॐ ह्रीं राग महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

मोह आत्म की याद भुलाये, बस बाहर में ही उलझाये।
होऊँ निर्मोह, जग से मैं होऊँ निर्मोह।।36।।

रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं मोह महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

औषध है फिर भी बीमार, है कर्मों का फल यह सार।
होऊँ निरोग, भक्ति कर प्रभु होऊँ निरोग।।37।।

रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं रोग महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

मृत्यु का भय सदा सताये, तुम मृत्यु निर्वाण बनाये।
सदा सुख होय, मुक्ति में तो सदा सुख होय।।38।।

रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं मृत्यु महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

नहीं पसीना आपको आये, शुद्ध स्वच्छ तन आपहि पाये।
हम भी पायें, ऐसा ही तन हम भी पायें।।39।।

रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं स्वेद महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

नहीं खेद का जरा है काम, बस आतम में है विश्राम।
खेद न होय, हमको जरा सा खेद न होय।।40।।

रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं विषाद महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

मान ज्ञान को करता दूर, दोषो से मैं हूँ भरपूर।
ज्ञान हम पायें, मान तजा मार्दव आ जायें।।41।।

रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं मद महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

रति क्षति आतम में देय, इसीलिये हम जग दुख लेय।
प्रीत हो जाये, निज आतम बस मुझको भाये।।

रत्नत्रय का बोध करादो, मुक्ति का रास्ता दिखलादो।
हो कल्याण, प्रभु जी मेरा, हो कल्याण।।42।।

ॐ ह्रीं रति महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

जरा सा विस्मय तुमको होय, तीन लोक पल में अवलोय।
करूँ मैं ध्यान, हरपल तेरा करता ध्यान।।43।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं विस्मय महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

होश गवां हम नींद में सोय, कांटे अपने मार्ग में बोय।
जाग हम जायें, जग की ओर से हम सो जायें।।44।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं निद्रा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

महाकष्ट हम जनम में पायें, सार्थक जनम नहीं कर पायें।
जन्म ना होय, प्रभू दुबारा जन्म न होय।।45।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं जन्म महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

अरति वस्तु से हम करते, आप दोष हर सुख वरते।
अरति न होय, समता भाव हमारे होय।।46।।
रत्नत्रय का ....

ॐ ह्रीं अरति महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

पूर्णार्घ्य
दोहा

दोषों की मैं खान हूँ, तुम दोषों से दूर।
दोष रहित मुझको करो, हो आनंद भरपूर।।

ॐ ह्रीं चतुर्थ वलये अष्टादश महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलय

बत्तीस गुण अर्घ्यालि

चाल छंद

(तर्ज - ऐ मेरे वतन के...)

त्रिलोक ज्ञान में झलके, पर जरा न हिलती पलकें।
ऐसी शक्ति मैं पाऊँ, चरणों में शीश झुकाऊँ।।47।।

ॐ ह्रीं ज्ञान चक्षु प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नश्वर माया को छोड़ा, अक्षय धन नाता जोड़ा।
अक्षय धन का अभिलाषी, यह भक्त आत्मा प्यासी।।48।।

ॐ ह्रीं अक्षय धन प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

मेरे हो भाग्य विधाता, साता के हो तुम दाता।
मेरा सौभाग्य है आया, तेरी पूजन को गाया।।49।।

ॐ ह्रीं सौभाग्य सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

विद्यायें शरण में आई, आश्रय पाकर हर्षाई।
कुछ विद्या हम भी पायें, तो आतम ध्यान लगायें।।50।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्या प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

प्रभु ने शाश्वत पद पाया, फिर जग ना मन को भाया।
शाश्वत पद हम भी पायें, चरणों में अर्घ्य चढ़ायें।।51।

ॐ ह्रीं शाश्वत पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

हो ज्येष्ठ श्रेष्ठ जगनामी, आतम में अंतर्यामी।
मुझको भी श्रेष्ठ बनाओ, दर्शन देने प्रभु आओ।।52।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

गुण की सुंदरता भायी, मूरत सुंदर दिखलाई।
मूरत को नित्य निहारूँ, यह जीवन तुम पर वारूँ।।53।।

ॐ ह्रीं आत्म लालित्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

साधन इंद्रिय को बनाया, फिर इससे तप करवाया।
ध्वज आत्म विजय फहराया, चरणों में शीश झुकाया।।54।।

ॐ ह्रीं इंद्रिय विजय कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

तप में शक्ति को लगाया, कर्मों को शीघ्र भगाया।
करमों ने हमें सताया, इसलिये शरण में आया।।55।।

ॐ ह्रीं आत्म विजय कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

शुभचिंतक आप हमारे, हम शरणा आये तुम्हारे।
चिंता हर शांति पाऊँ, चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ।।56।।

ॐ ह्रीं शुभचिंतक बंधुत्व प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

सूरज चंदा है हारा, ऐसा है तेज तुम्हारा।
उस ज्योति से ज्योति जलाऊँ, आतम उजियारा पाऊँ।।57।।

ॐ ह्रीं आत्म ज्योति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

मोहित ना होय किसी से, बस आतम ध्यान खुशी से।
निर्मोही आतम ध्यानी, बाकी के सब अज्ञानी।।58।।

ॐ ह्रीं मोह तम विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

तुम्हें धर्म वृक्ष सम पाया, प्रभु छाया में हूँ आया।
जग माया मुझसे छूटे, कर्मों से रिश्ता टूटे।।59।।

ॐ ह्रीं धर्म छाया प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

जन्मों की कड़िया तोड़ी, दृष्टि जग से है मोड़ी।
मैं जन्म रहित हो जाऊँ, पूजा का यह फल पाऊँ।।60।।

ॐ ह्रीं पुनर्जन्म रहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

क्षण भंगुर जग की कलियां, मुरझायें जग की गलियां।
नश्वर प्रभु नाम है तेरा, जो बने सहारा मेरा।।61।।

ॐ ह्रीं क्षणभंगुर जग रहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

हो ध्येय ध्यान हो ध्याता, तीनो में भेद न पाता।
यह ध्यान मुझे हो जाये, आतम का रूप सुहाये।।62।।

ॐ ह्रीं ध्याता ध्येय ध्यान सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप ने है पूज्य बनाया, तप ने आतम चमकाया।
तप करने भाव है जागा, इसलिये धर्म में लागा।।63।।

ॐ ह्रीं पूज्य पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

पावन है रूप तुम्हारा, शुभ दिव्य हुआ उजियारा।
दर्शन कर भक्ति गाऊँ, श्रद्धा से शीश झुकाऊं।।64।।

ॐ ह्रीं दिव्य रूप प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

अध्यात्म मयी है वाणी, कहलाती है जिनवाणी।
हित मित प्रिय वाणी पाऊँ, वचनों में ध्यान लगाऊँ।।65।।
ॐ ह्रीं पावन वाणी प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

गीता छंद (प्रभु पतित पावन . . .)

शाति सुधाकर, ज्ञान आकारं, चित्त शांति देती है।
शांति मयी मुद्रा तुम्हारी, खेद सब हर लेती है।।
मुक्ति प्रदायी, ज्ञान दायी, नाथ की पूजा करूँ।
सौभाग्य जागा आज मेरा, अशुभ कर्मों को हरूँ।।66।।
ॐ ह्रीं चित्त शांति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सन्मार्ग दिखलाते सभी को, वीतरागी हैं प्रभो।
सन्मार्ग बाधायें हरें, सबको सहायी हैं विभो।।67।।
मुक्ति प्रदायी..........
ॐ ह्रीं सन्मार्ग प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।
तीर्थ दर्शन बाद में, प्रत्यक्ष तीर्थंकर लखूँ।
वह शुभ समय कब आयेगा, जब दर्श स्वाद को मैं चखूँ।।68।।
मुक्ति प्रदायी..........
ॐ ह्रीं तीर्थंकर दर्श प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।
योगियो मुनियों से वंदित, सुर असुर से पूज्य हो।
ऐसे प्रभु की भक्ति पाऊँ, जन्म–जन्म ये धन्य हो।।69।।
मुक्ति प्रदायी..........
ॐ ह्रीं जन्म–जन्म प्रभु भक्ति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तप ध्यान की अग्नि में आतम, शुद्ध तुमने कर लिया।
सौभाग्य मुझको प्राप्त हो, मुक्ति में बस जाये जिया।।70।।
मुक्ति प्रदायी..........
ॐ ह्रीं शुद्ध आत्म द्रव्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।
कोमल हृदय ही जीव की, रक्षा सदा करता रहे।
मेरा हृदय कोमल बने, तब धर्म की धारा बहे।।71।।
मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं कोमल हृदय गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार में आना औ जाना, बस यही करता रहूँ।
आवागमन और कर्म टूटे, वरना जग के दुख सहूँ।।
मुक्ति प्रदायी, ज्ञान दायी, नाथ की पूजा करूँ।
सौभाग्य जागा आज मेरा, अशुभ कर्मों को हरूँ।।72।।

ॐ ह्रीं जन्म मृत्यु रहित गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन देव ने जैसा कहा, वैसा हमें अब करना है।
सद् आचरण मेरा बने, सब अशुभ भाव को हरना है।।73।।
मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं जिन धर्म आचरण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी पति लक्ष्मी का सुख, भक्तों को शीघ्र ही दीजिये।
संसार कष्ट को न सहूँ, अनुपम अचल सुख दीजिये।।74।।
मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

बाधायें सुख में आती हैं, सुख–दुख तुरत बन जाता है।
बाधायें मेरी दूर होवें, भक्त भाव से भाता है।।75।।
मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं निराबाध सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

मन आत्म को स्थिर किया, भगवान प्रभु तुम बन गये।
स्थिर करो यह मन हमारा, जगत में हम सुखी भये।।
मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं मानसिक स्थिरता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो न्याय शास्त्र के ज्ञानी प्रभु, अब न्याय मेरा कीजिये।
कर्मों ने हमको है सताया, न्याय मुझको दीजिये।।77।।
मुक्ति प्रदायी..........

ॐ ह्रीं जगत न्याय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

जिनतीर्थ तीर्थंकर की पदवी, भी मुझे तो पाना है।
रस्ता वही दिखलाओ मुझको, पास प्रभु के जाना हैं।।
मुक्ति प्रदायी, ज्ञान दायी, नाथ की पूजा करूँ।
सौभाग्य जागा आज मेरा, अशुभ कर्मों को हरूँ।।78।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

मंगल गाथा आपकी, गायें हम जिनदेव।
चन्द्र प्रभु भगवान जी, करूँ आपकी सेवा।।

ॐ ह्रीं पंचम वलये प्रभु गुण सहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्टम वलय

(प्रभु गुण अर्घ्यावलि)

शेर चला – दे दी हमें आजादी . . .

निर्भय निडर हो स्वामी मुझे, अभय कीजिये।
तप ध्यान धर्म करता रहूँ, अभय दीजिये।
मैं साधना के घाट तप का, दीप जलाऊँ।
बोधि समाधि प्राप्त हो, कर्मों को भगाऊँ।।79

ॐ ह्रीं भय रहित सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

क्षण–क्षण में शोक होता है, विशोक कीजिये।
आनंद वीणा सोई है, झंकार दीजिये।।80।
मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं शोक विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम का रूप देख के, कुछ और न भाया।
संसार से वैराग्य हुआ, शरण को पाया।।81।।
मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं वैराग्य भावना उद्भवाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

ज्ञानी तुम्हें विद्वान कहें, ज्ञान दीजिये।
वाणी तुम्हारी शास्त्र बनी, ध्यान दीजिये।।82।।
मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं शास्त्र मर्मज्ञता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

शांति का खजाना मिला, आतम के ध्यान से।

शांति का पथ है जग से अलग, शुद्ध ज्ञान से।।83।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं अपूर्व शांति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

अध्यात्म का अमृत पिया, विष कर्म हटाया।
अमृत मिले भक्तों को ध्यान, तेरा लगाया।।
मैं साधना के घाट तप का, दीप जलाऊँ।
बोधि समाधि प्राप्त हो, कर्मों को भगाऊँ।।84।।

ॐ ह्रीं अध्यात्म अमृत प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निव0 स्वाहा।

मंत्रो के द्वारा आपका हम, ध्यान लगाते।
हो कार्य सिद्ध पूर्ण मेरे, भावना भाते।।85।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं शुभ मंत्र सिद्धार्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

कर्मों ने छोड़ा आपको, मृत्युंजयी हुये।
मृत्यु पे विजय मैं भी पाऊँ, चरण को छुये।।86।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं मृत्युंजयी पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

सम्यक मेरा पुरुषार्थ सफल, आप ही करो।
बाधायें दूर करके नाथ, विपद को हरो।।
मैं साधना के घाट तप का, दीप जलाऊँ।
बोधि समाधि प्राप्त हो, कर्मों को भगाऊँ।।87।।

ॐ ह्रीं पुरुषार्थ सफलता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों से रहित आत्मा, प्रसन्न ही रहें।
कैसे प्रसन्न हम रहें जो, कष्ट को सहे।।88।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं सदा प्रसन्नता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

शुभ गुण के हो भंडार, दान गुण का दीजिये।
गुणवान भक्त मैं बनूँ, ये कृपा कीजिये।।89।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं शुभ गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

ज्यों दीप से दीपक जले, प्रकाश हो गया।
पावन तुम्हारा नाम ले मैं, पावन हो गया।।90।।

मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं पावन आत्मदर्शनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

संसार के कलह क्लेश, हमको सताये।
मेरे भी क्लेश दूर हों, आशीष ये पायें।।
मैं साधना के घाट तप का, दीप जलाऊँ।
बोधि समाधि प्राप्त हो, कर्मों को भगाऊँ।।91।।

ॐ ह्रीं संसार द्वंद विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

अध्यात्म का अमृत पिया, औ भूख ना लगी।
आहार रहित स्वस्थ हों हम, आत्मा जगी।।92।।
मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं निराहार स्वास्थ्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

संसार की निधियां प्रभु, चरणों की दासी हैं।
हो मान रहित आप, जगत से उदासी है।।93।।
मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं मान कषाय विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

कर्मों के हैं कलंक, आत्म काला कर दिया।
प्रभु भक्ति ने कलंक धो, उजाला कर दिया।।94।।
मैं साधना. . .

ॐ ह्रीं अपयश कलंक विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कार्य में उपद्रवों की, सेना आती है।
प्रभु भक्ति गीत सुन के, वो तो भाग जाती है।।
भक्ति करें चंदाप्रभु की, चरण छांव में।
हे आत्मा तू आजा आज अपने गांव में।।95।।

ॐ ह्रीं कार्य उपद्रव विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

चिंतामणी हैं कामधेनु, नाम तुम्हारा।
मन वांछा मेरी पूरी करो, तेरा सहारा।।96।।
भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं मनवांछा पूर्ण कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

औषध की जगह नाम तेरा, रोग भगाये।
हम स्वस्थ हों, शुभ व्यस्त हों, औ शीश झुकायें।।97।।
भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं धर्म औषध प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

जिनदेव पूजा सेवा के, निमित्त प्राप्त हों।
औ तीर्थ वंदना करूं मैं, शांति प्राप्त हो।।98।।
भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं शुभ निमित्त प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

सच्चे पिता तो आप हो, प्रभु रक्षा कीजिये।
संसार की उलझन से बचा, मुक्ति दीजिये।।
भक्ति करें चंदाप्रभु की, चरण छांव में।
हे आत्मा तू आजा आज अपने गांव में।।99।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं प्रभु पितृ छाया प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

हो ऋद्धि सिद्धि नाथ, ऋद्धि दाता हो तुम्ही।
देते दिखो न, देते हो, हो दाता वो तुम्ही।।100।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं ऋद्धि सिद्धि प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

जो तेरा सच्चा भक्त है, यश उसका फैलता।
अपयश को करे दूर, सौख्य साथ खेलता।।
भक्ति करें चंदाप्रभु की, चरण छांव में।
हे आत्मा तू आजा आज अपने गांव में।।101।।

ॐ ह्रीं महायश प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

जिनदेव सरोवर में डुबकी जो भी लगाये।
आनंद महा प्राप्त हो दुख दूर भगाये।।102।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं महा आनंद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

संसार में सब सौख्य पायें, भावना मेरी।
न द्वेष हो न ईर्ष्या, ये कामना मेरी।103।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्री कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

गुरुदेव मेरे आप हो, मैं शिष्य हूँ तेरा।
तेरी ही बात मानूँ मैं तो, भाव है मेरा।।104।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं परम गुरु शरण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

है क्रोध महाशत्रु मेरा, शांत कीजिये।
समता का सुरक्षा कवच हो, ज्ञान दीजिये।।105।।

भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं महाक्रोध शत्रु नाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

संपूर्ण विश्व शांतिमय जीवन जिया करें।
कल्याण कारी मार्ग हो, उस पर चला करें।।
भक्ति करें चंदाप्रभु की, चरण छांव में।
हे आत्मा तू आजा आज अपने गांव में।।106।।

ॐ ह्रीं विश्व शांति कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

विशिष्ट योग्यता मिले, विशिष्ट कार्य हों।
हो धर्म की प्रभावना, औ आत्म ध्यान हो।।107।।
भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं विशिष्ट योग्यता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

भगवान की भक्ति से तृप्ति, मन में है होवे।
आतम भी होवे तृप्त, बीज कर्म का खोवे।।108।।
भक्ति करें . . .

ॐ ह्रीं जगत सुख तृप्ति कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

जिज्ञासु इस भक्त पर, धरो धर्म का हाथ।
भक्ति अर्पित मैं करूँ, मिले मुक्ति का पाथ।।

ॐ ह्रीं षष्ठम वलये श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (दोहा)

भावों का ज्योति कलश, भक्ति भर कर लाय।
स्वीकारो चंदा प्रभो, शत–शत शीश झुकाय।।

(भुजंग प्रयात – नरेन्द्रं फणीन्द्रं)

चंदा प्रभु चंद्र, के जैसे चमके।
अंधेरा कहीं ना, वे सूरज से दमके।
महासेन महलों में, खुशियां है छाये।
सुलक्षण जी माता के, गर्भ समाये।।
रतन वृष्टि करके, धारा धर्म कीना।
न दुख था कहीं भी, सभी सौख्य लीना।।
तभी स्वर्ग से देव, देवियां आई।
औ माता की सेवा की, बतियां बताई।।
जनम का उजाला, चहु दिश में आया।

सुमेरु पे अभिषेक इंद्रो ने पाया।।
बचपन में जिनने भी तुमको खिलाया।
बड़ा भाग्य शाली वो मुक्ति को पाया।।
वैराग्य दीपक जला जब हृदय में।
तजी जग की वस्तु, लिया वास वन में।।
वे आतम से आतम का ध्यान लगाते।
करम कालिमा धो मन उजला बनाते।।
चहुं घातिया घात केवल उपाया।
बिना देखे दिखता ये अतिशय है पाया।।
समवशरण रचना कुबेर ने कीनी।
भक्तों ने भक्ति से गुण मणियां लीनी।।
प्रभो भक्त हम भी, शरण तेरी आये।
ये सुन लो कहानी, करम के सताये।।
नहीं ज्ञान सच्चा, नहीं आचरण है।
दो आशीष मुझको, हम तेरी शरण हैं।।
कभी क्रोध माया औ मान सताये।
कभी तृष्णा की अग्नि, मुझको जलाये।।
कभी द्वेष ईर्ष्या ने डाका है डाला।
मेरे मन में मोह का फैला है जाला।।
कर्मों की मार सही अब ना जाये।
मैं दर–दर में भटका, शरण तेरी आये।।
तुम्ही दीन बंधु दयावान पालक।
मैं दुखिया जनम का हूँ अज्ञानी बालक।।
मैं अर्पण समर्पण से वंदन हूँ करता।
ले सूरज और चंदा, से आरती करता।।
बुझे ज्ञान दीपक में उजियारा आये।
जो चंदा प्रभु के नित गुणगान गाये।।
हरो पीर मेरी औ संकट हटाओ।
मेरे मार्ग में आई बाधा भगाओ।।
तेरा नाम जिसने लिया उसको तारा।
जो भक्ति करे संकटों से उबारा।।
मेरी बार देरी क्यों प्रभु जी लगाते।
मेरी भक्ति सच्ची, क्यों मुझको रूलाते।।
नहीं नाथ अब मैं ना गलती करूँगा।
तुम्हारे अनुसार पथ पर चलूँगा।।

हे आठों करम नाश मुक्ति के वासी।
हमें युक्ति बतला रखो न प्रवासी।।
रहे सांस तन में भजन तेरे गाऊँ।
करें 'स्वस्ति' भक्ति, औ शीश झुकाऊँ।।

दोहा

चंदा के सम चंद्र प्रभ, चमकें चारों ओर।
किरणें कुछ मुझको मिलें, हो जीवन की भोर।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म विसर्जन के लिये, किया है यह शुभ पाठ।
मंगल जीवन हो मेरा, होवें सारे ठाठ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्र प्रभ जिनेन्द्राय नमः।

।।इति विधान संपूर्ण।।

प्रशस्ति

चौपाई

भक्ति का संकल्प निभाया, भक्ति में यह पाठ बनाया।
चंद्र प्रभो की भक्ति गाई, महिमा गरिमा है बतलाई।।
शाश्वत सुख के पालन हारे, शाश्वत सुख के देवन हारे।
शिखर समाधि जब चढ़ जाये, तब मुक्ति रस्ता खुल जाये।।
अंतिम लक्ष्य है मुक्ति पाना, फिर ना इस संसार में आना।
आनंद का झरना झर जाये, दुख का सागर शीघ्र सुखाये।।
प्रभु भक्ति के भाव हैं आये, मन मेरा लिखने को गाये।
आगरा शहर में कमला नगर है, उसमें महावीर मंदिर है।
वहां प्रारम्भ विधान किया था, पत्तल गली में पूर्ण किया था।।
दो दिन में विधान रचाया, 'स्वस्ति' ने प्रभु गुण को गाया।।

***

श्री चंदाप्रभु चालीसा

दोहा

पंच गुरु को नमन कर, जिन आगम को ध्याय।
देव शास्त्र गुरु शरण में, आत्म शांति को पाय।।
चन्द्र प्रभु है चन्द्र सम, देते हैं वरदान।
सोनागिर के चन्द्र को, शत–शत करूँ प्रणाम।।

चौपाई

चन्द्र प्रभु की जय–जय होवे, धर्म बीज हृदय में बोवे।
चन्द्र चांदनी ज्यों बरसाता, अमृत भक्त प्रभु से पाता।।
भक्ति करने भक्त जो आते, छोड़ दुःखों को शांति पाते।
लक्ष्मणा मां ने खुश हो पाला, ममता की पहनाई माला।।
महासेन राजा के प्यारे, जन–जन की आंखो के तारे।
मति श्रुत अवधि ज्ञान के धारी, कर्म कालिमा तुमसे हारी।।
चन्द्रपुरी है नगर सुहाना, दुल्हन सम था उसका बाना।
इन्द्रदेव धरती पर आये, स्वर्गपुरी को साथ में लाये।।
ऐरावत हाथी भी आया, गिरि सुमेरु अभिषेक कराया।
नाचे इन्द्र भी झूम–झूम के, प्रभु के चरणा चूम–चूम के।।
भोजन वस्त्र स्वर्ग से आया, सेवा करके मन हर्षाया।
चन्दा सम बढ़े समय को बीते, शरद पूर्ण की कांति जीते।।
इक दिन दर्पण में मुख देखा, फिर वैराग्य का कारण लेखा।
नश्वर काया नश्वर माया, तुमने इनसे पिंड छुड़ाया।।
विमला नामक पालकी लाये, इन्द्र सहेतुक वन को जाये।
छोड़ दिये सब वस्त्राभूषण, दूर किया अज्ञान का दूषण।।
पंच महाव्रत समिति धारी, गुप्ति रक्षा करें तुम्हारी।
राग द्वेष संसार बढ़ाये, वीतरागता को तुम पाये।।
आत्मज्ञान पा धर्म सिखाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।
तैयारी कर इन्द्र भी आया, समवशरण रचना करवाया।।
भव्यों का हुआ आना–जाना, ज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाना।
सोनागिर में किया था वासा, भक्त करें पूरी अभिलाषा।।
जहां–जहां प्रभु चरण पड़े थे, स्वर्ण कमल इन्द्रों ने रचे थे।
पत्थर का बन गया था सोना, पर्वत का हुआ रूप सलोना।।
जैन धर्म का किया प्रचारा, धर्म अहिंसा देकर नारा।
दुष्ट क्रोध को दूर भगाया, कर्मों ने न तुम्हें सताया।।
चमत्कार प्रभु ने दिखलाया, रोग शोक को दूर भगाया।
गूंगे को दे दी थी वाणी, पढ़े बैठकर वो जिनवाणी।।

लंगड़ा दौड़–दौड़ के चाले, अंधापन भी प्रभु जी टाले।
चंदा सम उजियाला पाया, मुक्ति का रस्ता दिखलाया।।
भक्ति से जो पूजा करते, निश्चित ही वे अतिशय वरते।
नंग–अनंग श्री महाराज, मुक्ति का पहना था ताज।।
साढ़े पांच कोड़ी मुनिराय, कर्म काट कर मुक्ति पाये।
सोनागिर दर्शन को जाऊँ, झुक–झुक चरणों शीश नवाऊँ।।
अतिशय पवित्र ये तीरथ जान, कण–कण इसका पावन मान।
ऊंचे–ऊंचे शिखर सुहाने, सुन्दर मंदिर दर्शन पाने।।
कर विहार सम्मेंद को आये, योग निरोध कर मुक्ति पाये।
मुक्तिपुरी में करते वासा, कर दो मेरी पूरी आशा।।
भक्तों के तुम बनो सहारा, दे दो प्रभु जी हमें किनारा।
'स्वस्ति' आकर शीश झुकाये, जग को तज मुक्ति को पाये।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, पाठ करें जो कोय।
सुख सम्पत्ति पावे अतुल, दुख दरिद्र सब खोय।।
चन्द्र प्रभु है चन्द्र सम, चन्द्रनाथ भगवान।
जीवन भर तुम भक्ति से, पाऊँ शिवपुर थाना।

"व्रत की विधि

श्री चन्द्रप्रभ विधान व्रत, चन्द्रप्रभु की आराधना साधना और उन जैसे गुणों की प्राप्ति के लिये किये जाते हैं। इस विधान से मनवांछित फल स्वयं ही प्राप्त होते हैं। क्यांकि चन्द्रप्रभु भगवान स्वयं ही कल्पवृक्ष हैं। प्रभु के गुण अनंत है किन्तु 108 गुणों की स्तुति कर व्रत किये जायेंगे। एक गुण में अनंत गुण समाहित हैं। यदि इन्ही गुणों की साधना भाव से की जाये तो सच्चे सुख की प्राप्ति भी संभव है।

शक्ति के अनुसार एकासन उपवास आदि कर सकते हैं। इस व्रत का प्रारम्भ भगवान चन्द्रप्रभु के किसी भी कल्याणक की तिथि से प्रारम्भ करें और मोक्ष कल्याणक की तिथि या किसी शुभ दिन समापन करें। उद्यापन में श्री चन्द्रप्रभु विधान करें एवं इच्छित वस्तु का दान करें। यह व्रत स्वयं करके दूसरे को करने की प्रेरणा दें। इस तरह 108 व्रत करके मनवांछित फल प्राप्त करें।

निम्नलिखित मंत्र जाप क्रम से व्रत के दिन करें:

1–ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः

2–ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः

3–ॐ ह्रीं अनन्त सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
4–ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
5–ॐ ह्रीं अर्ह श्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
6–ॐ ह्रीं अर्ह श्री त्रिछत्र प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
7–ॐ ह्रीं अर्ह श्री सिंहासन प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
8–ॐ ह्रीं अर्ह श्री दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
9–ॐ ह्रीं अर्ह श्री दुंदुभि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
10–ॐ ह्रीं अर्ह श्री पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
11–ॐ ह्रीं अर्ह श्री भामंडल प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
12–ॐ ह्रीं अर्ह श्री चौंसठ चंवर प्रातिहार्य गुण सहित अरहंत परमेष्ठिने नमः
13–ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
14–ॐ ह्रीं विनय सम्पन्न भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
15–ॐ ह्रीं शीलव्रतनिरतिचार भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
16–ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
17–ॐ ह्रीं संवेग भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
18–ॐ ह्रीं शक्ति तस्त्याग भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
19–ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
20–ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
21–ॐ ह्रीं वैय्यावृत्य करण भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
22–ॐ ह्रीं अरहंत भक्ति भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
23–ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
24–ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
25–ॐ ह्रीं प्रवचन करण भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
26–ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणि भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
27–ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
28–ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सल्य भावना गुण युक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
29–ॐ ह्रीं क्षुधा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
30–ॐ ह्रीं तृष्णा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
31–ॐ ह्रीं भय महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
32–ॐ ह्रीं क्रोध महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
33–ॐ ह्रीं चिंता महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
34–ॐ ह्रीं जरा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः

35–ॐ ह्रीं राग महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
36–ॐ ह्रीं मोह महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
37–ॐ ह्रीं रोग महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
38–ॐ ह्रीं मृत्यु महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
39–ॐ ह्रीं स्वेद महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
40–ॐ ह्रीं विषाद महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
41–ॐ ह्रीं मद महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
42–ॐ ह्रीं रति महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
43–ॐ ह्रीं विस्मय महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
44–ॐ ह्रीं निद्रा महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
45–ॐ ह्रीं जन्म महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
46–ॐ ह्रीं अरति महादोष रहित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
47–ॐ ह्रीं ज्ञान चक्षु प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
48–ॐ ह्रीं अक्षय धन प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
49–ॐ ह्रीं सौभाग्य सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
50–ॐ ह्रीं सर्व विद्या प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
51–ॐ ह्रीं शाश्वत पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
52–ॐ ह्रीं ज्येष्ठ पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
53–ॐ ह्रीं आत्म लालित्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
54–ॐ ह्रीं इंद्रिय विजय कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
55–ॐ ह्रीं आत्म विजय कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
56–ॐ ह्रीं शुभचिंतक बंधुत्व प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
57–ॐ ह्रीं आत्म ज्योति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
58–ॐ ह्रीं मोह तम विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
59–ॐ ह्रीं धर्म छाया प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
60–ॐ ह्रीं पुनर्जन्म रहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
61–ॐ ह्रीं क्षणभंगुर जग रहिताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
62–ॐ ह्रीं ध्याता ध्येय ध्यान सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
63–ॐ ह्रीं पूज्य पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
64–ॐ ह्रीं दिव्य रूप प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
65–ॐ ह्रीं पावन वाणी प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
66–ॐ ह्रीं मन चित्त शांति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः

67—ॐ ह्रीं सन्मार्ग प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
68—ॐ ह्रीं तीर्थंकर दर्श प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
69—ॐ ह्रीं जन्म—जन्म प्रभु भक्ति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
70—ॐ ह्रीं शुद्ध आत्म द्रव्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
71—ॐ ह्रीं कोमल हृदय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
72—ॐ ह्रीं जन्म मृत्यु रहित गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
73—ॐ ह्रीं जिन धर्म आचरण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
74—ॐ ह्रीं लक्ष्मी सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
75—ॐ ह्रीं निराबाध सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
76—ॐ ह्रीं मानसिक स्थिरता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
77—ॐ ह्रीं जगत न्याय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
78—ॐ ह्रीं तीर्थंकर पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
79—ॐ ह्रीं भय रहित सुख प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
80—ॐ ह्रीं शोक विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
81—ॐ ह्रीं वैराग्य भावना उद्भवाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
82—ॐ ह्रीं शास्त्र मर्मज्ञता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
83—ॐ ह्रीं अपूर्व शांति प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
84—ॐ ह्रीं अध्यात्म अमृत प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
85—ॐ ह्रीं शुभ मंत्र सिद्धार्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
86—ॐ ह्रीं मृत्युंजयी पद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
87—ॐ ह्रीं पुरुषार्थ सफलता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
88—ॐ ह्रीं सदा प्रसन्नता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
89—ॐ ह्रीं शुभ गुण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
90—ॐ ह्रीं पावन आत्मदर्शनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
91—ॐ ह्रीं संसार द्वंद विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
92—ॐ ह्रीं निराहार स्वास्थ्य प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
93—ॐ ह्रीं अपयश कलंक विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
95—ॐ ह्रीं कार्य उपद्रव विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
96—ॐ ह्रीं मनवांछा पूर्ण कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
97—ॐ ह्रीं धर्म औषध प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
98—ॐ ह्रीं शुभ निमित्त प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
99—ॐ ह्रीं प्रभु पितृ छाया प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः

100—ॐ ह्रीं ऋद्धि सिद्धी प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
101—ॐ ह्रीं महायश प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
102—ॐ ह्रीं महा आनंद प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
103—ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्री कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
104—ॐ ह्रीं परम गुरु शरण प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
105—ॐ ह्रीं महाक्रोध शत्रु नाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
106—ॐ ह्रीं विश्व शांति कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
107—ॐ ह्रीं विशिष्ट योग्यता प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः
108—ॐ ह्रीं जगत सुख तृप्ति कराय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः

जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं चन्द्र प्रम जिनेन्द्राय नमः, सर्व शान्तिं कुरू कुरू स्वाहा।

आरती

तर्ज : भक्ति बेकरार है . . .

चन्द्र प्रभु दरबार है, अतिशय चमत्कार है।
चन्दा प्रभु के चरणों की, आरती बारंबार है।।
हो...दीप थाल हाथों में लेकर, आया तेरे द्वारे जी—2
संकट हरना झोली भरना, आशा मन में लाया जी—2
चन्द्रप्रभु......................
हो... मात सुलक्षणा सुत कहलाये, खुशियां चारों ओर हुई—2
गुण के सागर भर दो गागर, तन मन अर्पण करता जी—2
चन्द्रप्रभु......................
हो... गिरि सम्मेंद में ललित कूट में, आकर आप विराजे जी—2
मुक्त हुये चरणों का दर्शन, रोम—रोम खिल जावे जी—2
चन्द्रप्रभु......................
हो... सोनागिर के पर्वत ऊपर, समवशरण रचवाया जी—2
नंग अनंग कुमार मुनि ने, मोक्ष यहां से पाया जी—2
चन्द्रप्रभु......................

परम विदुषी लेखिका आर्यिका रत्न श्री 105 स्वस्ति भूषण माता जी द्वारा रचित कृतियां

श्री जिनपद पूजांजलि (विशेष कृति)

विधान संग्रह

1. श्री कल्पद्रुम विधान 2. श्री इन्द्रध्वज विधान 3. श्री सिद्धचक्र विधान 4. श्री सम्यक् विधान संग्रह 5. श्री मनुष्य लोक विधान 6. श्री श्रुत स्कन्ध विधान 7. श्री चौबीसी विधान 8. श्री नवग्रह शांति विधान 9. श्री कल्याण मंदिर विधान 10. श्री दश लक्षण विधान 11. श्री पंचमेरू विधान 12. श्री ऋषि मंडल विधान 13. श्री कर्म दहन विधान 14. श्री समवशरण विधान 15. श्री चौंसठ ऋद्धि विधान 16. श्री यॉग मंडल विधान 17. श्री पंच परमेष्ठी विधान 18. श्री पंच कल्याणक विधान 19. श्री वास्तु शुद्धि विधान 20. तीर्थकर विधान संग्रह 21. श्री पंच बालयति विधान 22. श्री सम्मेद शिखर विधान 23. श्री सोनागिर विधान 24. श्री सिद्धक्षेत्र गिरनार विधान 25. श्री आदिनाथ विधान 26. श्री पद्मप्रभु विधान 27. श्री चन्द्रप्रभ विधान 28. श्री वासुपूज्य विधान 29. श्री विमलनाथ विधान 30. श्री शान्तिनाथ विधान 31. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान 32. श्री नेमिनाथ विधान 33. श्री पार्श्वनाथ विधान 34. श्री महावीर विधान 35. श्री जम्बू स्वामी विधान 36. श्री भक्तामर स्तोत्र विधान, 37. श्री नन्दीशवरद्वीप लघु विधान, 38. श्री रत्नत्रय विधान, 39. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग -1, 40. श्री तीर्थंकर विधान संग्रह भाग-2, 41. श्री चरित्र शुद्धि विधान 42. श्री संभवनाथ विधान, 43. श्री सोलहकारण विधान, 44. श्री सुमतिनाथ विधान, 45. श्री अभिनंदन नाथ विधान, 46. श्री कुन्थुनाथ विधान, 47. श्री अजितनाथ विधान

काव्य संग्रह

1. मेरी कलम से 2. भजन संग्रह 3. भजन सरिता 4. अमृत की बूंदे 5. श्री सम्मेद शिखर चालीसा 6. बड़ा ही महत्व है 7. आरती ही सारथी 8. जिन ज्ञान किरण 9. भक्ति संग्रह 10. काव्य वाटिका (भाग-1, 2) 11. श्री भक्तामर जी पाठ (हिन्दी) 12. प्रभु भक्ति की पोटली (चालीसा संग्रह) 13. भक्ति पुंज 14. आत्मा की आवाज 15. विनयांजलि 16. श्री सहस नाथ स्तोत्र (हिन्दी रुपान्तरण) 17. पुण्य वर्धिनी 18. आचार्यो की प्रभु भक्ति (हिन्दी पद्यानुवाद) 19. भक्ति की संम्पदा (स्तोत्र संग्रह)

पूजन संग्रह

1. श्री सम्मेद शिखर टोंक पूजन 2. दीपावली पूजन 3. श्री आदिनाथ पूजन एवं चालीसा (रानीला) 4. श्री आदिनाथ पूजन अतिशय क्षेत्र (चाँदखेड़ी) 5. पद्म प्रभु पूजन (शाहपुर) 6. श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन संग्रह (सोनागिर जी) 7. श्री चन्द्र प्रभु पूजा (अतिशय क्षेत्र, तिजारा जी) 8. श्री चंद्रप्रभ चौबीसी जिनालय पूजन (कैराना) 9. श्री वासुपूज्य जिन पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र चंपापुरजी) 10. शांतिनाथ पूजन (सूर्य नगर) 11. श्री नेमीनाथ पूजन संग्रह (सिद्धक्षेत्र गिरनार जी) 12. श्री पार्श्वनाथ पूजन एवं चालीसा 13. पार्श्वनाथ पूजन (जलालाबाद) 14. श्री पार्श्वनाथ, हांसी अतिशय क्षेत्र 15. अतिशय क्षेत्र बड़ागांव पूजा 16. श्री महावीर जिन पूजन संग्रह 17. स्वस्ति जिन अर्चना (सिद्ध क्षेत्र पावापुरजी) 18. श्री गोम्टेश्वर बाहुबली स्वामी विनयांजलि 19. कुंदकुंद स्वामी पूजा संग्रह, बारा (राजस्थान) 20. गुरू अर्चना (आ. 108 सन्मतिसागर जी) 21. श्री शांतिनाथ पूजा संग्रह (झालरापाटन) 22. श्री मुनि सुव्रतनाथ पूजन, भजन, चालीसा (जहाजपुर) 23. श्री मुनि सुव्रतनाथ पूजन एवं चालीसा (किरठल)

गद्य संग्रह

1. दीक्षा कठिन परीक्षा 2. जैन त्यौहार कैसे मनायें ? 3. प्रतिक्रमण (किये अपराध जो हमने) 4. स्वस्ति आत्म बोध 5. राग से वैराग्य की ओर 6. मुक्ति सोपान (धार्मिक सांप सीढ़ी) 7. श्री ऋषभदेव अनुशीलन 8. नानी की कहानी (भाग-1,2,3) 9. प्रभावना प्रवाह (भाग-1, 2) 10. आओ दीपावली पूजन करें 11. दीपावली कैसे मनायें। 12. टर्निंग पॉइण्ट (भाग-1, 2) 13. वीतरागी का आकर्षण 14. ऊँ नमः सबको क्षमा 15. आहार को समझे औषधि 16. स्मार्ट कौन? 17. आप V.I.P. है